ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 215-217

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

बंगाल में वॉश चित्रण शैली का उद्भव

अमरेन्दर सिंह

शोध अध्येता– जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, (म0प्र0) भारत

Received-07.08.2022, Revised-10.08.2022, Accepted-13.07.2022 E-mail: amrendra26.as@gmail.com

सारांशः – *बंगाल में उन्नीसवीं शताब्दी में अशान्त एंव अव्यवस्थित परिस्थितियों के कारण अनेक सामाजिक एंव सांस्कृतिक परिवर्तन उभर कर सामने आ गये। "कला में राष्ट्रीयता की भावना का उद्भव ब्रिटिष शिक्षा प्रणाली और उससे उपजे असंतोश के साथ देख सकते हैं। राष्ट्र और भारतीयता कला के सन्दर्भ में तब बहस का केन्द्र बनी जब थोपी हुई विदेषी शिक्षा नीति के विरोध में स्वर भूटने लगे। मुगल साम्राज्य के पतन और राजस्थानी और पहाड़ी राज्यों के ब्रिटिष भारत के अधीन होने के साथ ही सैकड़ो वर्षो की भरतीय कला की निरंतरता और प्रसार पर एक गहरा आघात लगा। इसके साथ ही लघु चित्रण शैली की सुनियोजित और शास्त्रीय पद्धति में ह्रास होने लगा परन्तु लोक परम्परा में कला चलती रही, कुम्हार, लोक, चित्रकार, लकड़ी का काम करने वाले कलाकार, मूर्तिकार काम करते रहे और भारतीय विषयों को जीवित रखा परन्तु कला में हम जिसे शास्त्रीय कहते है। वह निश्चित तौर पर गौण होने लगा। लघु शैली की बारीकियों को समझने वाले बहुत कम ही चित्रकार बचे'। धीरे–धीरे भारतीय कला पतन की तरफ ऐसी फिसलना शुरू हुई जैसें मुट्ठी से फिसलती रेत। "लगभग इसी समय भारतीय चित्रकार की क्षितिज पर 'राजा रवि वर्मा' का उदय हुआ श्रेष्ठ भारतीय कला परम्परा के इस ह्रासोन्मुख काल में कला दक्ष, परिश्रमशील, चित्रकार राजा रवि वर्मा ने भारतीय धार्मिक पौराणिक, ऐतिहासिक, कथाओं पर आधारित चित्र रचनाएँ बनाकर दर्षकों व कला प्रेमियों पर अपनी आकर्षक एवं मनोरम कला की गहरी छाप छोड़ी"[1]। परन्तु राजा रवि वर्मा के चित्रों के विषय भारतीय थे परन्तु तकनीक विदेशी। इसके बाद भारतीय कला एक नया रूप बंगाल शैली के प्रभाव सें आया। इसी नये रूप को हम वॉश चित्रण पद्धति के नाम से जानते हैं। यह पद्धति जल रंग चित्रण का ही एक भाग है।*

कुंजीभूत शब्द– अव्यवस्थित परिस्थितियां, सामाजिक एंव सांस्कृतिक परिवर्तन,शिक्षा प्रणाली, भारतीयता कला, रचनाएँ।

"भारतीय कला पर उस समय अधिक प्रहार हुआ जब पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति इस पर अपना प्रभुत्व जमाने लगी। अंग्रेजों की दृष्टि में भारत की तो अपनी कला थी ही नहीं। इसलिए वह अपने साथ ब्रिटेन से कलाकारों को भी लाते थे या उन्हें निमंत्रण देकर भारत बुलाते थे। अंग्रेज चित्रकारों का भारत आगमन ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ ही हुआ, अंग्रेज चित्रकार कम्पनी के अधिकारियों अथवा राज दरबारों व अभिजात्य वर्ग के संरक्षण में व्यावसायिक आधार पर उनके व्यक्ति चित्रों, ऐतिहासिक एंव विशेष महत्त्व की घटनाओं और दृष्यों का चित्रण करते थे। ये चित्रकार यहाँ के जनजीवन और राजा महाराजाओं के वस्त्राभूषणों से सजे राजसी ठाठ–वाट के चित्र बनाते थे। ये चित्र लंदन वासियों के लिए बहुत ही रोचक होते, इसलिए लंदन में धीरे–धीरे इन चित्रों की माँग बढ़ने लगी और अंग्रेज चित्रकार अधिक से अधिक संख्या में आने लगे"।

"बंगाल में जमीनदार और नये वर्ग के उद्भव के साथ ही एक नई कला का जन्म हुआ जिसमें भारतीयता की झलक थी। ये जमीनदार लोग अकादमिक शैली में शिक्षित भारतीय कलाकारों और बंगाल में रह रहे विदेशी चित्रकारों से शबीह चित्र बनवाते थे। 18वीं सदी से बंगाल ने पुर्तगाल, डच, फ्रेंच और ब्रिटिश प्रभावों को देखा और इनका असर यहाँ की कला और समाज पर भी पड़ा, खासकर शहरों में रहने वाले धनी वर्ग पर। इस प्रकार कला के मायने भी बदले और पाश्चात्य कला में अभिरूचि बढ़ी विदेशी कलाकारों ने तैल माध्यम को प्रचारित किया और धीरे–धीरे तैल माध्यम के चित्रों की मांग बढ़ते देख स्थानीय कलाकार भी इस माध्यम को व्यवहार में लाने लगे। सर्वप्रथम तैल चित्रण शैली को व्यवहार में लाने वाले कलाकार मूल रूप से लोक शैली के थे। वे पाश्चात्य शैली की 'चिरसकुरो और डायमेन्षनल इफैक्ट को सीख रहे थे, जो वास्तविकता को दर्शाने के लिए घटक हैं। पाश्चात्य विषयों के साथ ही उन चित्रकारों ने तैल माध्यम में हिन्दू देवी–देवताओं के चित्र भी बनाने शुरू किये। जिसके विषय मूल रूप से महाभारत और रामायण पर आधारित होते थे। बंगाल में प्रचलित माँ दुर्गा की पंडाल प्रतिमाओं और कृष्ण लीला पर आधारित चित्र भी बनाये जाते थे। ये चित्र उच्च वर्ग के लोग अपने ठाकुर दालानों या पूजा घरों को सुसज्जित करने के लिए बनवाया करते थे। यह शैली "अर्ली बंगाल आयल" के नाम से प्रचलित हुई विदेशी माध्यम में स्वदेशी विषयों के चित्रण का यह पहला प्रयास था"।

ब्रिटिश सरकार की नयी शिक्षा नीति के साथ आर्ट स्कूलों की स्थापना हुई जिसकी शुरूवात कलकत्ता आर्ट स्कूल से हुई जोकि 1854 ई0 में स्थापित हुआ और बाद में तीन प्रमुख नगरों मद्रास, बम्बई और लाहौर में खोला गया। इन आर्ट स्कूलो में अकादमिक रियलिज्म पर विषेष ध्यान दिया जाता था और पढ़ने–पढ़ाने के माध्यम मूल रूप से ब्रिटेन या अन्य पश्चिमी

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

देशों से लाये गये कला के नमूने हुआ करते थे'। कलकत्ता, बम्बई और ट्रावनकोर (जहाँ से राजा रवि वर्मा थे) के चित्रकार पोट्रेट, लैण्डस्केप और अन्य पाश्चात्य विधाओ में स्वतंत्र रूप से चित्रकारी कर रहे थे तथा नाम और यश भी कमा रहे थे। इनमें कई आर्ट स्कूल से पढ़े थे, तो कइयों ने निजी शिक्षकों द्वारा तैल चित्र का हुनर सीखा था। इन्हीं दिनों राजा रवि वर्मा ने अपने तैल चित्रों की अपार लोक प्रियता को ध्यान में रखते हुए लिथोप्रेस की स्थापना की और सस्ते दरों पर देवी–देवताओं और ऐतिहासिक पात्रों के चित्रों की प्रतिलिपियाँ बाजार में उतारी। इन दिनों स्कूल में पढ़ाई जाने वाली कला और तकनीकी पूर्णतया विदेशी थी, यहाँ तक की हमारी कला परम्परा का परिचय तक नहीं दिया जाता था। 1864 इसवीं में कलकत्ता आर्ट स्कूल के प्रिंसिपल बनकर जब हेनरी लोके आए तो पाठ्यक्रम को सुगठित किया और भारतीय कलाकारों को दाखिले के लिए प्रोत्साहित किया। ये कलाकार ज्यादातर लोक शैली में कुषल थें ये और विदेशी माध्यम से तैल चित्रों में नए प्रयोग कर रहे थें। हेनरी लोके के आने के बाद भी कलकत्ता आर्ट स्कूल के पाठ्यक्रम में कोई खास बदलाव तो नहीं आया, पर पाठ्यक्रम सुनियोजित जरूर हो गया। पहले की तरह ही ड्राईग–पेंटिग, माडलिंग, लिथोग्राफ ही पाठ्यक्रम में रहे। इसी समय राजेन्द्र लाल मित्र की किताब 'The Antiquity of Orissa' में छपे रेखा–चित्रों ने भारतीय कला को समझने का नया अवसर दिया स्कूल में इस पर आधारित प्लास्टर ऑफ पेरिस के नमूने तथा रेखा चित्र बनाये गये और इसे छात्रों के अध्ययन के लिए रखा गया। और इसी तरह न केवल बांगल में बल्कि पूरे भारत में लगभग 20वीं शताब्दी के प्रथम दशक तक की जाती रही।

"19वीं सदी के अंत में कलकत्ता में नई भारतीय कला के विषय में बाते होने लगी थी। सौन्दर्यशास्त्र और भारतीय कला की समझ और आर्ट स्कूलों द्वारा स्थापित मानकों पर प्रश्न उठने लगा था। राजा रवि वर्मा के चित्र भारतीय विषयों और संस्कृति को दर्शाते थे। उनके भारतीय कला के प्रति योगदान को नकारा नहीं जा सकता। तैल चित्र कला में काम करते हुए और शबीह चित्र कला में ख्याति और धन अर्जित करने के साथ ही उन्होनें पौराणिक विषयों पर भी चित्रकारी की। धार्मिक आइकोनोग्राफी को समझने और भारतीय विषयों को प्रचलित करने में उनके चित्र सफल रहे। परन्तु ये चित्र भारतीय परम्परा के भावों को उकेरने में उतने सफल नहीं हो पा रहे थे। राजा रवि वर्मा के पात्र देशी वस्त्र आभूषण में जरूर दिखते थे, परन्तु उनका चित्रण विदेश पद्धति के आधार पर था। इस प्रकार जो पूर्णतया भारतीय हो उसकी खोज शुरू हुई। कला और संस्कृति में अपनी जड़ो को टटोलने पर बल दिया जाने लगा"[5]। ये ऐसा समय था जब भारतीय जनमानस के मन में अंग्रेजी के क्रिया–कलापों के प्रति आक्रोश की भावना उभरने लगी थी। "लगभग इसी समय देवदूत बनकर ई0वी0 हैवेल (1864–1973) का भारत में आगमन हुआ। कुछ समय मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट में काम करने के बाद कलकत्ता स्कूल ऑफ आर्ट के सुप्रीटेडेंट बने समय की नज़ाकत को देखते हुए ई0वी0 हैवेल ने कला विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भारतीय पद्धति के चित्रांकन का समावेष किया और संसार भर का ध्यान भारत की चित्रकला की ओर आकर्षित किया। उन्होंने कहा कि "यूरोपीय कला तो केवल सांसारिक वस्तुओं का ज्ञान कराती है, पर भारतीय कला सर्वव्यापी अमर और अपार है"[6]। ई0वी0 हैवेल ने अपने सहयोगी के रूप में अवनीन्द्र नाथ टैगौर को उपाचार्य पद पर कलकत्ता स्कूल ऑफ आर्ट में आमंत्रित किया। इसके साथ ही यह कला महाविद्यालय आधुनिक भारतीय कला इतिहास का महत्वपूर्ण अंग बन गया। इस घटना के फलस्वरूप अवनीन्द्र नाथ के अपने स्वदेशी आंदोलन को आगे बढ़ाने का सुनहेरा अवसर मिल गया। ई0वी0 हैवेल के सहयोग से अवनीन्द्र नाथ टैगौर स्वदेशी कला और इसके महत्त्व और अनिवार्यता के विषय में बोलते और लिखते रहे।

श्री अवनीन्द्र नाथ टैगोर ने श्री हैवेल के साथ मिलकर भारतीय शैली के पुनरूत्थान का सूत्रपात किया अवनीन्द्र नाथ टैगोर की कला पर मुगल, राजपूत, पहाड़ी, अजन्ता, ईरानी, चीन, जापान एवं पाश्चात्य शैली का प्रभाव था। अतः इनके सकल–समन्वय से उन्होनें एक नयी शैली (वॉश शैली) का प्रराम्भ किया, जो बंगाल शैली के नाम से जानी गयी।

अवनीन्द्र नाथ के वॉश शैली के चित्रों के लहरिया अलंकरण धुन्ध और धुएँ की तरह पारदर्शी पृष्ठभूमि से रेखाओं में उभरती आकृतियाँ रंगो की परतों से बनने वाले जादुई संयोजन और मुगल शैली से प्रभावित लयात्मक रेखाओं में भारतीय कला की अंतरात्मा दिखी। वॉश तकनीक उनकी कला में भावनात्मक अभिव्यक्ति को उदघटित करने में सकारात्मक साबित हुई और यही वॉश शैली शीघ्र ही शान्ति निकेतन एवं गवर्नमेण्ट स्कूल ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट कोलकत्ता के कला विधार्थियों के माध्यम से भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में प्रसारित हुई। बंगाल से विस्तारित कला लहर अकाल्पनिक रूप से आगामी वर्षो में विस्तार पा गई। बंगाल शैली राजनीतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों में यूरोपीय प्रस्ताव के विरूद्ध एक आन्दोलन था। जो बौद्धिक विचार, स्वेदश प्रेम तथा तत्कालीन परिस्थितियों का प्रतिफल था। इसमें पूर्व भारतीय शैलियों की भाँति न तो आश्रयदाताओं की इच्छानुसार और न ही एक मत सिद्धान्त के आधर पर चित्रण किया गया। इसका प्रेरणा स्रोत अजन्ता, मुगल व राजस्थानी चित्र थे। बंगाल शैली का एक मात्र नारा था" परम्परागत भारतीयता की ओर पुनः चलो"। बंगाल शैली अवनीन्द्र नाथ की निजी शैली एवं दृढ़ विश्वास से विशेष रूप से प्रभावित हुई। भारतीय काव्य स्रोतो, पुरा–कथाओं, पुराणों, शस्त्रीय

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

साहित्य सिद्धान्तों के अनुसार सौन्दर्य पूर्ण कोमल आकृतियों एवं विषयों का चित्रण विविध तकनीकों (जल, टेम्परा, वॉश तकनीक) का प्रयोग अजन्ता का रेखाकंन सौन्दर्य तथा मुगल चित्रों की सौम्यरंग योजना बंगाल शैली की विशेषता रही है। इस कला आन्दोलन से भारत में एक राष्ट्रीय शैली (वॉश शैली) का जन्म हुआ जिसका एक मात्र उद्देश्य भारतीय कला के प्रति आस्था जागृत करना तथा कलाकारों के भाव, स्वतन्त्रता की अभिव्यक्ति को महत्त्व देना था। जिसका विकास देशव्यापी स्तर पर तीव्रता से हुआ। देश में कला विद्यालयों की स्थापना एवं कला षिक्षकों की माँग के अनुरूप इस शैली का प्रसार होता गया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कला दीर्घा दृष्य कला की अन्तरदेषीय पत्रिका, अक्टूबर 2015, वर्ष 16 पेज नं0–29.
2. ''ललित कला की धारा'' असित कुमार हल्दार इलाहाबाद 1960 पेज नं0–64.
3. दा रायल अकादमी ऑफ आर्ट्स लंदन द्वारा सन् 1947–48 में आयोजित ''आर्ट ऑफ इण्डिया एंड पाकिस्तान'' प्रदर्शनी के अवसर पर प्रकाषित कैटलॉग।
4. कला दीर्घा दृष्य कला की अन्तरदेशीय पत्रिका, अक्टूबर 2015, वर्ष 16 पेज नं0–30.
5. कला दीर्घा दृष्य कला की अन्तरदेशीय पत्रिका, अक्टूबर 2015, वर्ष 16 पेज नं0–31.
6. कला दीर्घा दृष्य कला की अन्तरदेशीय पत्रिका, अक्टूबर 2015, वर्ष 16 पेज नं0–33.

*****